

भारतीय दृष्टि से धर्म और दर्शन

भारत में धर्म और दर्शन दोनों ही अत्यंत गूढ़ और व्यापक विषय हैं, जो न केवल धार्मिक आस्था बल्कि जीवन के समग्र दृष्टिकोण को भी प्रभावित करते हैं।

1. भारतीय दृष्टि में धर्म

भारतीय परंपरा में “धर्म” का अर्थ केवल पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक जीवनशैली और नैतिकता का प्रतीक है।

धर्म का मूल अर्थ “धारण करने योग्य” (जो जीवन, समाज और विश्व को धारण करता है) होता है।

हिंदू ग्रंथों में धर्म को चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) में प्रथम स्थान दिया गया है।

विभिन्न दर्शनों में धर्म को कर्तव्य, नैतिकता, सत्य, करुणा, अहिंसा और समाज के कल्याण से जोड़ा गया है।

2. भारतीय दृष्टि में दर्शन

भारतीय दर्शन (Darshan) केवल बौद्धिक विचार नहीं, बल्कि व्यवहारिक जीवन की सच्चाई को समझने का साधन है।

इसमें आत्मा, ब्रह्मांड, मोक्ष, ज्ञान और कर्म के संबंध को समझाने के लिए विभिन्न विचारधाराएँ विकसित हुई हैं।

भारतीय दर्शन को दो प्रमुख भागों में बाँटा गया है:

1. आस्तिक दर्शन (जो वेदों को मानते हैं) - न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा, वेदान्त।
2. नास्तिक दर्शन (जो वेदों को नहीं मानते) - चार्वाक, जैन, बौद्ध।
3. भारतीय दृष्टि की विशेषताएँ

भारतीय दर्शन भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों को संतुलित करता है।

आत्मा और परमात्मा के संबंध को समझाने के लिए भक्ति, ज्ञान और कर्म मार्गों की व्याख्या करता है।

धर्म को केवल व्यक्तिगत आस्था न मानकर, समाज के कल्याण का साधन माना जाता है।

“वसुधैव कुटुंबकम्” की अवधारणा समस्त विश्व को एक परिवार के रूप में देखती है।

निष्कर्ष

भारतीय दृष्टि में धर्म और दर्शन केवल सैद्धांतिक अवधारणाएँ नहीं हैं, बल्कि वे एक आदर्श जीवन जीने की प्रक्रिया हैं। धर्म नैतिकता और जीवन के नियमों को निर्धारित करता है, जबकि दर्शन उनके पीछे छिपे गूढ़ रहस्यों और सत्य को समझने में सहायता करता है।